8½/10 Good

Yogita
BAP/17/92
Pol. Sci (SEC)

Page No. 29/oct/18

प्र० भारत में विभिन्न प्रकार के बजटो पर चर्चा करे।

उ० परिचय :- बजट शब्द की उत्पत्ति फ्रांसीसी शब्द 'बोजते' से हुई है जिसका अर्थ है चमड़े का थैला। यह शब्द सर्वप्रथम सन् 1733 में इंग्लैंड की संसद ने व्यंग्य-स्वरूप बोला गया था जो आज विश्वभर में प्रचलित हो गया है। बजट एक ऐसा शब्द है जो आम जिन्दगी में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कोई भी समझदार व्यक्ति अपने घर हर छोटे बड़े काम या कोई भी खर्चे या निवेश का बजट बना कर ही करता है ठीक उसी प्रकार किसी भी राज्य के वित्त प्रशासन में बजट की एक अहम भूमिका होती है। प्रत्येक कार्यपालिका कार्यपालिका राजकीय कार्यों को संचालित करने के लिए प्रतिवर्ष अनुमानित आय-व्यय का विवरण बजट के रूप में प्रस्तुत करती है। भारत में पहला बजट 7 अप्रैल 1860 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा पेश किया गया था कारण अब हम बजट के विभिन्न परिभाषा व उसके प्रकार तथा सिद्धान्त की चर्चा करते है।

Page No.
Date

2. बजट का अर्थ :- बजट की विभिन्न परिभाषाएं है जो उनका विवरण करते है। जो कि कई विद्वानो द्वारा किया गया है।

2.1 ~~विलोबी~~ विलोबी के अनुसार :- बजट सरकार के आय - व्यय का अनुमान मात्र ही नही है, बल्कि यह एक प्रतिवेदन, अनुमान तथा प्रस्ताव है जिसके माध्यम से कार्यपालिका, व्यवस्थापिका के सम्मुख आती है और विस्तार के साथ अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की वित्तीय स्थितियों का प्रतिवेदन करती है।

2.2 रैमो स्टार्म के अनुसार :- बजट एक ऐसा परिपत्र है जिसमें सार्वजनिक राजस्व तथा व्यय की प्रारम्भिक योजनाएं प्रस्तुत की जाती है।

2.3 एक तुलनात्मक व्यवस्था :- एक प्रकार से बजट एक तुलनात्मक व्यवस्था है जिसमें एक ओर धन का आगमन किया जाता है तो दूसरी ओर विभिन्न मदो पर धन के व्यय का आकलन किया जाता है।

2.4 भारत का संविधान मे बजट :-

भारत के संविधान मे बजट शब्द कही भी उल्लिखित नही है बल्कि संविधान के अनुच्छेद 112 मे कहा गया है कि राष्ट्रपति प्रत्येक वित्तीय वर्ष के सम्बन्ध मे संसद के दोनो सदनों के समक्ष एक वार्षिक वित्तीय विवरण रखेगा। इसमे वित्तीय वर्ष के दौरान भारत सरकार के अनुमानित प्राप्तियो और खर्चो का विवरण होता है जो 1 अप्रैल से प्रारंभ होकर 31 मार्च तक होता है।

3/ बजट के विभिन्न प्रकार :- बजट की विभिन्न विद्वानो की परिभाषाओ का आकलन करने के बाद अब हम बजट के विभिन्न प्रकारो का विवरण करेंगे विस्तारपूर्वक भारत में समय-समय पर प्रयोग किए गए बजट के विभिन्न रूपो का विश्लेषण निम्नलिखित है:-

3.1/ निष्पादन बजट :- भारत मे परंपरागत बजट प्रणाली को अपनाया गया जिससे कि संसद के द्वारा बजट पर आवश्यक नियंत्रण रखा जाता है परन्तु 1950 के दशक में बजट में कुशलता पर भी ध्यान दिया जाने लगा। इसी कार्य-काल मे निष्पादन बजट का प्रयोग हूवर कमीशन (1949) द्वारा अमेरिका मे किया गया।

इस आयोग के द्वारा अमेरिका में इस बजट को अपनाने का सुझाव दिया गया। और भारत में पारम्परिक परंपरागत बजट का मुख्य उद्देश्य सरकारी खर्चों पर नियंत्रण करना तथा विकास कार्यों पर ध्यान देना था। यही कारण है कि भारत में निष्पादन बजट की आवश्यकता पड़ी। निष्पादन बजट स्पष्ट उद्देश्य पर आधारित था। जिसमें "कार्य के परिणामों" के मूल्यांकन किया जाता था।

3.2 **शून्य आधारित बजट :-**

शून्य आधारित बजट सर्वप्रथम विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में 1983 में किया गया। इसके पश्चात वी.पी. सिंह उस कार्यकाल में वित्त मंत्री थे उन्होंने इसको बजट की प्रक्रिया में शामिल कर दिया था। शून्य आधारित बजट को कारणों से अपनाया।

- निष्पादन बजट का सफल नहीं हो पाया था।
- देश के बजट में पाया जाने वाला घाटा।

शून्य आधारित बजट प्रणाली के विभिन्न लाभ

Page No.
Date

→ गैर महत्वपूर्ण कार्य समाप्त
→ कार्यकुशलता मे वृद्धि
→ करो की वृद्धि

3.3 कार्यक्रम बजट :- कार्यक्रम बजट का उदय भी अमेरिका मे ही हुआ अमेरिकी राष्ट्रपति जॉनसन द्वारा 1965 मे कार्यक्रम बजट को अपनाया गया। परन्तु अमेरिका मे यह बजट ज्यादा समय तक सफल नही रहा और बाद मे इसे छोड़ दिया। कार्यक्रम बजट प्रणाली मे योजना, कार्यक्रम व बजट को एक साथ मिला दिया जाता है।

3.4 जेण्डर आधारित बजट :-

यह बजट सन 2004 की पंचवर्षीय योजना के साथ शुरू किया गया था और 2005-2006 के बजट मे पहली बार जेण्डर बजटिंग की शुरुआत की गई और 2006-20007 मे इस व्यवस्था को और आगे बढ़ाया। इस व्यवस्था मे सरकार महिलाओ के अधिकारो व विकास के लिए कई प्रावधान तैयार किया करती है और बजट बनाती है।

Page No.
Date

3.5 **ग्रीन बजट** :- यह बजट भी भारत में प्रयोग होने वाले बजट का रूप है। क्या प्रकार है। इस बजट की महत्वपूर्णता आजकल बहुत बढ़ गई है क्योंकि औद्योगीकरण के लिए वायुमंडल में अत्यंत प्रभाव पड़ा है जिसके कारण पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए ग्रीन बजट बनाना अत्यंत आवश्यक था। ग्रीन बजट में सरकार पर्यावरण से संबंधित राजस्व तथा व्ययों का विवरण करती है।

निष्कर्ष :- बजट बहुत ही लाभ है इसके द्वारा ही आज जनता या कोई की प्रभावशाली छोटे से छोटा या बड़ा-से-बड़ा कार्य सम्पन्न किया जाता है। बजट के कई रूप है जैसे शून्य आधारित बजट, जेण्डर बजट इत्यादि जो इनको सरकार द्वारा अपनाए गए। यह जो कि कल्याणकारी राज्य को चलाने के लिए बेहद आवश्यक है। बजट के कई सिद्धान्त भी है जिसके द्वारा हमको यह ज्ञात होता है बजट किस प्रकार से बनाया जाना चाहिए जैसे बजट में नियमितता होना चाहिए स्पष्टता होनी चाहिए बजट संतुलित तथा लोचशील होना चाहिए।